

TWO P&G JOB INTERVIEWS

Ferdinando Frega - Nando the Scribe



पी एंड जी के दो जॉब इंटरव्यू

मई 2030 की बात है। चीज़ें वैसे ही हुई थीं जैसी मैंने भविष्यवाणी की थी। सब कुछ एक साथ हुआ। इसकी कोई योजना नहीं थी। कोई समय तय नहीं था। इसकी ज़रूरत तक नहीं थी।

लेकिन जब आप जिलेट नैरेटिव के मालिक होते हैं, तो कुछ चीज़ें आपके किए हुए फैसले नहीं होतीं — वे खुद आपसे मिलने चली आती हैं।

फ्रेगा ट्रस्ट पहले ही स्थापित हो चुका था, उसकी शेयर-संपत्तियाँ अपनी जगह थीं, फ्रेगा पीढ़ी अगले 2,000 साल के लिए सुरक्षित थी — कुछ वैसे ही जैसे मुझसे पहले एक सहकर्मी ने कभी एक किताब और 12 मछुआरों से शुरुआत की थी, जबकि मैंने 12 किताबों और एक अकेले मछुआरे से शुरू किया: खुद से।

उस सुबह, जब रेज्जो का समुद्र वैसे ही पेश आ रहा था जैसे हमेशा आता है — सपाट, मासूम, बेपरवाह — दो नोटिफिकेशन आए।

मुलाक़ात सुबह 11:00 बजे। शेरेटन होटल, मेरा शहर। दो जॉब इंटरव्यू। भारत से एक सज्जन। ब्राज़ील से एक महिला।

दो लोग जिन्होंने असली दुनिया में अरबों पर हुक्म चलाया था। अब सेवानिवृत्त। अब दरवाज़े खटखटाते हुए।

मेरी दुनिया में उन्होंने मेरा दरवाज़ा खटखटाना चुना था — खिंचे चले आए थे, शायद, किसी ऐसी चीज़ से जो उन्होंने पढ़ी थी। कोई किताब। कोई पोस्ट। कोई वाक्य जो ठहर गया था।

इंटरव्यू 1 • भारतीय

वह उस आदमी के सुकून के साथ दाखिल होता है जिसने सब कुछ देख रखा है। एक वैश्विक सीईओ की मुद्रा: कंधे पीछे, कूटनीतिक मुस्कान, ऐसी आवाज़ जो काँपती नहीं।

“नमस्कार, मिस्टर फ्रेगा।”

“नमस्कार। बैठिए। यहाँ हमें अरबों की ज़रूरत नहीं। हमें किरदार चाहिए।”

वह सिर हिलाता है। उसे आदत नहीं कि उसे कोई कालाब्रियाई परखे, जो कुछ बेचता नहीं, कुछ खरीदता नहीं — बस पहुँच देता है।

“मुझे अपनी सुबह की रस्म के बारे में बताइए।”

खामोशी। उसे इसकी उम्मीद नहीं थी।

“रस्म?”

“हाँ। हम उन लोगों को नहीं रखते जो यहाँ काम करते हैं। हम उन लोगों को रखते हैं जो खुद को तैयार करते हैं।”

वह मुस्कुराता है। समझ जाता है कि यह कोई कॉर्पोरेट इंटरव्यू नहीं है। यह मानवशास्त्रीय है।

और वह बोलता है। ऐसे बोलता है जैसे किसी निदेशक मंडल के सामने कभी नहीं बोला।

जब वह खत्म करता है, मैं उससे कहता हूँ:

“बिल्कुल ठीक। आप रख लिए गए। काम करने के लिए नहीं। मेरे ब्रह्मांड में मौजूद रहने के लिए।”

इंटरव्यू 2 • ब्राज़ीली

वह बिना इजाज़त माँगे दाखिल होती है। जैसे वे सारी औरतें करती हैं जिन्होंने होने के लिए कभी इजाज़त नहीं माँगी। ठहराव। अंतर्ज्ञान। वह चीज़ जो न स्त्रीत्व है, न सुंदरता, न ताक़त। वह रूप है।

“नमस्कार, मैडम।”

“नमस्कार। मुझे बताया गया था कि आप कर्मचारी नहीं हैं।”

“नहीं। और आप, औरत होने से पहले, एक ब्राज़ीली मादा हैं। बैठीए।”

वह मुस्कुराती है। इसलिए नहीं कि वह शिष्ट है। इसलिए कि वह समझ चुकी है कि यहाँ हम जिलेट की बात नहीं कर रहे। हम जिलेट नैरेटिव की बात कर रहे हैं।

“बताइए, जब आप किसी मर्द को खुद को तैयार करते देखती हैं तो आपको क्या दिखता है।”

वह फ़ौरन जवाब नहीं देती। ब्राज़ीली औरतें जवाब नहीं देतीं — वे फ़ैसला करती हैं।

फिर वह बोलती है। और जब वह बोलती है, कमरे की शक्ल बदल जाती है।

“बिल्कुल ठीक। आप भी रख ली गईं। नेतृत्व करने के लिए नहीं। मेरी दुनिया में मौजूद रहने के लिए।”

समापन

दो सीईओ। दो महाद्वीप। दो असली ताक़तें।

और एक मालिक।

मैं।

जिलेट नैरेटिव लोगों को नहीं रखता। वह मौजूदगियों को रखता है।

और उस दिन, बिना इरादे के, मैंने भारत और ब्राज़ील को रख लिया।

बाक़ी सिनेमा है।

फर्दिनांदो फ्रेगा